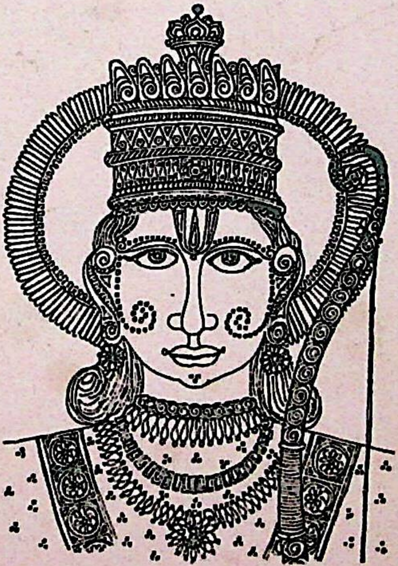

रामायण

(मनका - १०८)

जिन्दगी जब तक रहेगी फुरसत न होगी काम से।
कुछ समय ऐसा निकालो प्रेम कर लो श्री राम से॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

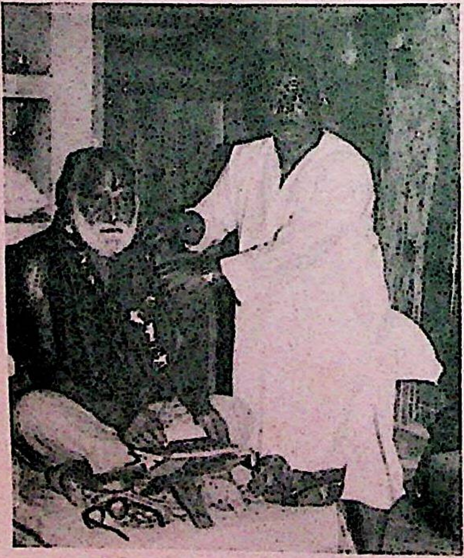

श्री विद्यावल्लभतीर्थ स्वामीजी

श्री मध्व मठ, गीता सत्संग भवन,

दारागंज, प्रयाग-211006

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामायण

रघुपति राघव राजाराम पतितपावन सीताराम।
जय रघुनन्दन जय घनश्याम पतितपावन सीताराम॥

भीड़ पड़ी जब भक्त पुकारे दूर करो प्रभु दुःख हमारे,
दशरथ के घर जन्मे राम। पतितपावन सीताराम॥ १

विश्वामित्र मुनीश्वर आये, दशरथ भूप से वचन सुनाये,
संग में भेजे लक्ष्मण राम। पतितपावन सीताराम॥ २

वन में जाय ताड़का मारी, चरण छुआए अहिल्या तारी,
ऋषियों के दुःख हरते राम। पतितपावन सीताराम॥ ३

जनक पुरी रघुनन्दन आयें, नगर निवासी दर्शन पाये,
सीता के मन भाये राम। पतितपावन सीताराम॥ ४

रघुनन्दन ने धनुष चढ़ाया, सब राजों का मान घटाया,
सीता ने वर पाये राम। पतितपावन सीताराम॥ ५

परशुराम क्रोधित हो आये, दुष्ट भूप मन में हरषाये,
जनक राज ने किया प्रणाम। पतितपावन सीताराम॥ ६

बोले लखन सुनो मुनि ग्यानी, संत नहीं होते अभिमानी,
मीठी वाणी बोले राम। पतितपावन सीताराम॥ ७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्मण वचन ध्यान मत दीजो, जो कुछ दण्ड दास को दीजो,
धनुष तोडय्या मैं हूँ राम। पतितपावन सीताराम ॥ ८
लेकर के यह धनुष चढ़ाओ, अपनी शक्ति मुझे दिखलाओ,
छूवत चाप चढ़ाये राम। पतितपावन सीताराम ॥ ९
हुई उर्मिला लखन की नारी, श्रुति कीर्ती रिपूसूदन प्यारी,
हुई माण्डवी भरत के बाम। पतितपावन सीताराम ॥ १०
अवधपुरी रघुनन्दन आये, घर-घर नारी मंगल गाये,
बारह वर्ष बिताये राम। पतितपावन सीताराम ॥ ११
गुरु वशिष्ट से आज्ञा लीनी, सज तिलक तैयारी कीनी,
कल को होंगे राजा राम। पतितपावन सीताराम ॥ १२
कुटिल मंथरा ने बहकायी, कैकेई ने यह बात सुनाई,
दे दो मेरे दो वरदान। पतितपावन सीताराम ॥ १३
मेरी विनती तुम सुन लीजो, भरत पुत्र को गद्दी दीजो,
होत प्रातः वन भेजो राम। पतितपावन सीताराम ॥ १४
धरनी गिरे भूप तत्काला, लागा दिल में सूल विशाला,
तब सुमंत बुलवाये राम। पतितपावन सीताराम ॥ १५
राम पिता को शीश नवाये, मुख से वचन कहा नहीं जाये,
कैकेयी वचन सुनयो राम। पतितपावन सीताराम ॥ १६
राजा के तुम प्राण प्यारे, इनके दुःख हरोगे सारे,
अब तुम वन में जाओ राम। पतितपावन सीताराम ॥ १७
वन में चौदह वर्ष बिताओ, रघुकुल रीति-नीति अपनाओ,
आगे इच्छा तेरी राम। पतितपावन सीताराम ॥ १८
सुनत वचन राघव हर्षाए, माता जी के मन्दिर आये,
चरण कमल में किया प्रणाम। पतितपावन सीताराम ॥ १९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माता जी मैं तो वन जाऊँ, चौदह वर्ष बाद फिर आऊँ,
चरण कमल देखूँ सुख धाम। पतितपावन सीताराम ॥ २०
सुनी शूलसम जब वह बानी, भू पर गिरी कौशल्यारानी,
धीरज बँधा रहे श्रीराम। पतितपावन सीताराम ॥ २१
समाचार सुनि लक्ष्मण आये, धनुष बाण संग परम सुहाये,
बोले संग चलूँगा राम। पतितपावन सीताराम ॥ २२
सीताजी जब यह सुन पाई, रंग महल से नीचे आई,
कौशल्या को किया प्रणाम। पतितपावन सीताराम ॥ २३
मेरी चूक क्षमा कर दीजो, वन जाने की आज्ञा दीजो,
सीता को समझाते राम। पतितपावन सीताराम ॥ २४
मेरी सीख सिया सुन लीजो, सास ससुर की सेवा कीजो,
मुझको भी होगा विश्राम। पतितपावन सीताराम ॥ २५
मेरा दोष बता प्रभु दीजो, संग मुझे सेवा में लीजो,
अर्द्धांगिनी तुम्हारी राम। पतितपावन सीताराम ॥ २६
राम लखन मिथिलेश कुमारी, वन जाने की करी तैयारी,
रथ में बैठ गये सुख धाम। पतितपावन सीताराम ॥ २७
अवधपुरी के सब नर नारी, समाचार सुन व्याकुल भारी,
मचा अवध में अति कोहराम। पतितपावन सीताराम ॥ २८
शृंगवेरपुर रघुबर आये, रथ को अवधपुरी लौटाये,
गंगा तट पर आये राम। पतितपावन सीताराम ॥ २९
केवट कहै चरण धुलवाओ, पीछे नौका में चढ़ जाओ,
पत्थर कर दी, नारी राम। पतितपावन सीताराम ॥ ३०
लाया एक कठौता भारी, चरण कमल धोये सुखकारी,
नाव चढ़ाये लक्ष्मण राम। पतितपावन सीताराम ॥ ३१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उतराई में मुंदरी दीनी, केवट नें यह विनती कीनी,
उतराई नहीं लूँगा राम। पतितपावन सीताराम॥ ३२
तुम आये हम घाट उतारे, हम आयेंगे घाट तुम्हारे,
तब तुम पार लगाओ राम। पतितपावन सीताराम॥ ३३
भारद्वाज आश्रम पर आए, राम लखन ने शीष नवाए,
एक रात कीन्हो विश्राम। पतितपावन सीताराम॥ ३४
भाई भरत अयोध्या आये, कैकेई को कटु वचन सुनाये,
क्यों तुमने वन भेजे राम। पतितपावन सीताराम॥ ३५
चित्रकूट रघुनन्दन आये, वन को देख सिया सुख पाये,
मिले भरत से भाई राम। पतितपावन सीताराम॥ ३६
अवधपुरी को चलिए भाई, ये सब कैकेई की कुटिलाई,
तनिक दोष नहीं मेरा राम। पतितपावन सीताराम॥ ३७
चरण पादुका तुम ले लीजो, दर्शन करके पूजा कीजो,
भरत ने कंठ लगाये राम। पतितपावन सीताराम॥ ३८
आगे चले राम रघुराया, निशाचरों का वंश मिटाया,
ऋपियों के हुए पूरन काम। पतितपावन सीताराम॥ ३९
जनस्थान आए रघुराई, शूर्पनखा की नाक कटाई,
खरदूषन को मारे राम। पतितपावन सीताराम॥ ४०
पंचवटी रघुनन्दन आए, कनक मृग "मारीच" संग धाये,
लक्ष्मण तुम्हें बुलाते राम। पतितपावन सीताराम॥ ४१
रावण साधु वेष में आया, भूख ने मुझको बहुत सताया,
भिक्षा दो यह धर्म का काम। पतितपावन सीताराम॥ ४२
भिक्षा लेकर सीता आई, हाथ पकड़ रथ में बैठाई,
सूनी कुटिया देखी राम। पतितपावन सीताराम॥ ४३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धरनी गिरे राम रघुराई, सीता के बिन व्याकुलताई,
हे प्रिय सीते, चीखे राम। पतितपावन सीताराम॥ ४४
लक्ष्मण, सीता छोड़ नहीं तुम आते, जनक दुलारी नहीं गंवाते,
तुमने सभी बिगाड़े काम। पतितपावन सीताराम॥ ४५
कोमल बदन सुहासिनी सीते, तुम बिन व्यर्थ रहेंगे जीते,
लगे चांदनी-जैसे धाम। पतितपावन सीताराम॥ ४६
सुन री मैना, सुन रे तोता, मैं भी पंखों वाला होता,
वन वन लेता ढूँढ तमाम। पतितपावन सीताराम॥ ४७
सुन रे गुलाब, चमेली, जूही, चम्पा मुझे बता दे तू ही,
सीता कहां, पुकारे राम! पतितपावन सीताराम॥ ४८
हे नाग, सुनो मेरे मन हारी, कही देखी हो जनक दुलारी,
तेरी सीजै चोटी श्याम। पतितपावन सीताराम॥ ४९
श्यामा हिरनी, तू ही बता दे जनक नन्दनी मुझे मिला दे,
तेरे जैसे आंखे श्याम। पतितपावन सीताराम॥ ५०
हे अशोक, मन शोक मिटा दे, चन्द्रमुखी से मुझे मिला दे,
होगा तेरा सच्चा नाम। पतितपावन सीताराम॥ ५१
वन वन ढूँढ रहे रघुराई, जनक दुलारी कहीं न पाई,
गृद्धराज ने किया प्रणाम। पतितपावन सीताराम॥ ५२
चख चख कर फल शबरी लाई, प्रेम सहित पाये रघुराई,
ऐसे मीठे नहीं हैं आम। पतितपावन सीताराम॥ ५३
विप्र रूप धरि हनुमत आए, चरण कमल में शीश नवाये,
कन्धे पर बैठाये राम। पतितपावन सीताराम॥ ५४
सुग्रीव से करी मिलाई, अपनी सारी कथा सुनाई,
बाली पहुँचाया निज धाम। पतितपावन सीताराम॥ ५५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिंहासन सुग्रीव बिठाया, मन में वह भारी पछिताया,
वर्षा ऋतु आई हे राम। पतितपावन सीताराम ॥ ५६

हे भाई लक्ष्मण तुम जाओ, वानरपति को यूं समझाओ,
सीता बिन व्याकुल हैं राम। पतितपावन सीताराम ॥ ५७

देश देश वानर भिजवाए, सागर के सब तट पर आए,
सहते भूख प्यास और घाम। पतितपावन सीताराम ॥ ५८

सम्पाती ने पता बताया, सीता को रावण ले आया,
सागर कूद गए हनुमान। पतितपावन सीताराम ॥ ५६

कोने कोने पता लगाया, भगत विभीषन का घर पाया,
हनुमान को किया प्रणाम। पतितपावन सीताराम ॥ ६०

हनुमान उपवन में आये, वृक्ष तले सीता को पाये,
आँसू बरसे आठो याम। पतितपावन सीताराम ॥ ६१

रावण संग निशिचरी लाके, सीता को बोला समझा के,
मेरी ओर तुम देखो बाम। पतितपावन सीताराम ॥ ६२

मन्दोदरी बना दूं दासी, सब सेवा में लंका वासी,
करो भवन चलकर विश्राम। पतितपावन सीताराम ॥ ६३

चाहे मस्तक कटे हमारा, मैं नहीं देखूँ बदन तुम्हारा,
मेरे तन मन धन हैं राम। पतितपावन सीताराम ॥ ६४

ऊपर से मुद्रिका गिराई, सीता जी ने कंठ लगाई,
हनुमान ने किया प्रणाम। पतितपावन सीताराम ॥ ६५

मुझको भेजा है रघुराया, सागर कूद यहाँ मैं आया,
मैं हूं रामदास हनुमान। पतितपावन सीताराम ॥ ६६

माता की आज्ञा मैं पाऊँ, भूख लगी मीठे फल खाऊँ,
पीछे मैं लूंगा विश्राम। पतितपावन सीताराम ॥ ६७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृक्षों को मत हाथ लगाना, भूमि गिरे मधुर फल खाना,
निशाचरों का है यह धाम। पतितपावन सीताराम॥ ६८
हनुमान ने वृक्ष उखाड़े, देख देख माली ललकारे,
मार-मार पहुँचाये धाम। पतितपावन सीताराम॥ ६९
अक्षय कुमार को स्वर्ग पहुँचाया, इन्द्रजीत फाँसी ले आया,
ब्रह्मफांस से बंधे हनुमान। पतितपावन सीताराम॥ ७०
सीता को तुम लौटा दीजो, उनसे क्षमा याचना कीजो,
तीन लोक के स्वामी राम। पतितपावन सीताराम॥ ७१
भगत विभीषण ने समझाया, रावण ने उसको धमकाया,
संनमुख देख रहे हनुमान। पतितपावन सीताराम॥ ७२
रुई, तेल, घृत, वसन मँगाई, पूँछ बाँध कर आग लगाई,
पूँछ घुमाई है हनुमान। पतितपावन सीताराम॥ ७३
सब लंका में आग लगाई, सागर में जा पूँछ बुझाई,
हृदय कमल में राखे राम। पतितपावन सीताराम॥ ७४
सागर कूद लौट कर आये, समाचार रघुवर ने पाये,
जो माँगा सो दिया इनाम। पतितपावन सीताराम॥ ७५
वानर रीछ संग में लाए, लक्ष्मण सहित सिंधु तट आए,
लगे सुखाने सागर राम। पतितपावन सीताराम॥ ७६
सेतू कपि नल नील बनावें, राम-राम लिख सिला तिरावें,
लंका पहुंचे राजा राम। पतितपावन सीताराम॥ ७७
निशाचरों की सेना आई, गरज तरज कर हुई लड़ाई,
वानर बोले जय सिया राम। पतितपावन सीताराम॥ ७८
इन्द्रजीत ने शक्ति चलाई, धरनी गिरे लखन मुरझाई
चिन्ता करके रोये राम। पतितपावन सीताराम॥ ७९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब मैं अवधपुरी से आया, हाय पिता ने प्राण गँवाया,
वन में गई चुराई बाम। पतितपावन सीताराम ॥ ८०
भाई तुमने भी छिटकाया, जीवन में सुख नहीं पाया,
सेना में भारी कोहराम। पतितपावन सीताराम ॥ ८१
संज़ीवनी बूटी को लाए, तो भाई जीवित हो जाये,
बूटी लायेगा हनुमान। पतितपावन सीताराम ॥ ८२
जब बूटी का पता न पाया, पर्वत ही लेकर आया,
काल नेम पहुँचाया धाम। पतितपावन सीताराम ॥ ८३
भक्त भरत ने बाण चलाया, चोट लगी हनुमत लँगड़ाया,
मुख से बोले जय सियाराम। पतितपावन सीताराम ॥ ८४
बोले भरत बहुत पछताकर, पर्वत सहित बाण बैठाकर,
तुम्हें मिला दूँ राजा राम। पतितपावन सीताराम ॥ ८५
बूटी लेकर हनुमत आया, लखन लाल उठ शीष नवाया,
हनुमत कण्ठ लगाये राम। पतितपावन सीताराम ॥ ८६
कुम्भकरन उठकर तब आया, एक बाण से उसे गिराया,
इन्द्रजीत पहुँचाया धाम। पतितपावन सीताराम ॥ ८७
दुर्गापूजन रावण कीनो, नौ दिन तक आहार न लीनो,
आसन बैठ किया है ध्यान। पतितपावन सीताराम ॥ ८८
रावण का ब्रत खंडित कीना, परम धाम पहुँचा ही दीना,
वानर बोले जय सियाः राम। पतितपावन सीताराम ॥ ८९
सीता ने हरि दर्शन कीन्ना, चिन्ता शोक सभी तज दीना,
हंस कर बोले राजा राम। पतितपावन सीताराम ॥ ९०
पहले अग्नि परीक्षा पाओ, पीछे निकट हमारे आओ,
तुम तो पतिव्रता हे बाम। पतितपावन सीताराम ॥ ९१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करी परीक्षा कंठ लगाई, सब वानर सेना हरषाई,
राज्य विभीषन दीन्हा राम। पतितपावन सीताराम॥ ९२
फिर पुष्पक विमान मँगाया, सीता सहित बैठे रघुराया,
किष्किन्धा को लौटे राम। पतितपावन सीताराम॥ ९३
ऋषि पत्नी दर्शन को आई, दीन्हीं उनको सुन्दरताई,
गंगा तट पर आये राम। पतितपावन सीताराम॥ ९४
नन्दी ग्राम पवनसुत आये, भगत भरत को वचन सुनाए,
लंका से आए हैं राम। पतितपावन सीताराम॥ ९५
कहो विप्र तुम कहाँ से आए, ऐसे मीठे वचन सुनाए,
मुझे मिला दो भैया राम। पतितपावन सीताराम॥ ९६
अवधपुरी रघुनन्दन आये, मन्दिर-मन्दिर मंगल छाये,
माताओं को किया प्रणाम। पतितपावन सीताराम॥ ९७
भाई भरत को गले लगाया, सिंहासन बैठे रघुराया,
जग ने कहा 'हैं राजा राम'। पतितपावन सीताराम॥ ९८
सब भूमि विप्रों को दीनी, विप्रों ने वापस दे दीनी,
हम तो भजन करेंगे राम। पतितपावन सीताराम॥ ९९
धोबी ने धोबन धमकाई, रामचन्द्र ने यह सुन पाई,
बन में सीता भेजी राम। पतितपावन सीताराम॥ १००
बाल्मीकि आश्रम में आई, लव व कुश हुए दो भाई,
धीर वीर ज्ञानी बलवान। पतितपावन सीताराम॥ १०१
अश्वमेघ यज्ञ कीन्हीं राम, सीता बिनु सब सूने काम,
लव कुश वहाँ दियो पहचान। पतितपावन सीताराम॥ १०२
सीता राम बिना अकुलाई, भूमि से यह विनय सुनाई,
मुझको दीजो विश्राम। पतितपावन सीताराम॥ १०३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सीता भूमि में समाई, सुनकर चिन्ता करी रघुराई,
ब्रंह्मचारी बन गए राम। पतितपावन सीताराम ॥ १०४
राम राज्य में सब सुख पावें, प्रेम मग्न हों हरि गुन गावें,
चोरी जारी का नहिं काम। पतितपावन सीताराम ॥ १०५
ग्यारह हजार वर्ष परयन्ता, राज कीन्ह श्रीलक्ष्मी कंता,
फिर बैकुण्ठ पधारे राम। पतितपावन सीताराम ॥ १०६
अवध पुरी बैकुण्ठ सिधाई, नर नारी सबने गति पाई,
शरणागत प्रतिपालक राम। पतितपावन सीताराम ॥ १०७
"श्याम सुन्दर" ने लीला गाई, मेरी विनय सुनी रघुराई,
भूलूं नहीं तुम्हारा नाम। पतितपावन सीताराम ॥ १०८
यह माला पूरी हुई, मनका एक सौ आठ।
मनोकामना पूर्ण हो, नित्य करे जो पाठ ॥

॥ आरती श्रीरामचन्द्र जी की ॥

जगमग जगमग जोत जली है। राम आरती होन लगी है।
भक्ति का दीपक प्रेम की बाती, आरती संत करें दिन राती ॥
आनन्द की सरिता उभरी है। जगमग जगमग जोत जली है ॥
कनक सिंहासन सीया समेता, बैठहिं राम होई चित चेता ॥
वाम भाग में जनक लली है। जगमग जगमग जोत जली है ॥
आरती हनुमत के मन भावे, राम कथा नित शंकर गावे।
सन्तों की ये भीड़ लगी है। जगमग जगमग जोत जली है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री हनुमान चालीसा

दोहा— श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
वरनऊँ रघुवर विमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर, जय कपीस तिहुँ लोक उजागर
राम दूत अतुलित बलधामा, अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा
महाबीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी
कंचन वरन विराज सुरेशा, कानन कुण्डल कुंचित केसा
हाथ वज्र और ध्वजा बिराजे, काँधे मूँज जनेऊ साजै
शंकर सुवन केसरीनन्दन, तेज प्रताप महा जग बन्दन
विद्यावान गुणी अति चातुर, रामकाज करिबे को आतुर
प्रभु चरित सुनिवे को रसिया, राम लखन सीता मन बसिया
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा, विकट रूप धरि लंक जरावा
भीम रूप धरि असुर संहारे, रामचन्द्र के काज संवारे
लाय सजीवन लखन जियाये, श्री रघुवर हरसि उर लाये
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई
सहस वदन तुम्हारो जस गावैं, अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा, नारद सारद सहित अहीसा
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते, कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा, राम मिलाय-राज पद दीन्हा
तुम्हारो मन्त्र विभीषण माना, लंकेश्वर भए सब जग जाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जुग सहस्र जोजन्न पर भानू, लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं, जलधि लांघि गये अचरज नाहीं ।
दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।
राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना, तुम रक्षक काहू को डरना ।
आपन तेज सम्हारो आपै, तीनों लोक हाँकतें काँपै ।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै, महाबीर जब नाम सुनावै ।
नासै रोग हरै सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत बीरा ।
संकट तें हनुमान छुड़ावै, मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।
सब पर राम तपस्वी राजा, तिनके काज सकल तुम साजा ।
और मनोरथ जो कोई लावै, सोई अमित जीवन फल पावै ।
चारों जुग परताप तुम्हारा, है परसिद्ध जगत उजियारा ।
साधु संत के तुम रखवारे, असुर निकंदन राम दुलारे ।
अष्ट सिद्ध नौ निधि के दाता, अस वर दीन जानकी माता ।
राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा ।
तुम्हरे भजन राम को भावै, जनम जनम के दुःख बिसरावै ।
अंतकाल रघुवर पुर जाई, जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ।
और देवता चित न धरई, हनुमत सेई सर्व सुख करई ।
संकट कटै मिटैं सब पीरा, जो सुमरै हनुमत बलबीरा ।
जै जै जै हनुमान गोसाईं, कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।
जो सत बार पाठ कर कोई, छूटहि बंदि महा सुख होई ।
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा, होय सिद्धि साखी गौरीसा ।
तुलसीदास सदा हरि चेरा, कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।

दोहा— पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सूर भूप ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वन्दना

हे दयामय! आप ही संसार के आधार हो।
आप ही करतार हो हम सबके पालन हार हो ॥ हे०
जन्मदाता आपही माता पिता भगवान् हो।
सर्व सुखदाता सखा भ्राता हो तन धन प्राण हो ॥ हे०
आपके उपकार का हम ऋण चुका सकते नहीं।
बिनु कृपा के शांति सुख का सार पा सकते नहीं ॥ हे०
दीजिये वह मति बनें हम सद्गुणी संसार में।
मन हो 'मंजुल' धर्ममय और तन लगे उपकार में ॥ हे०

मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुवीर।
अस विचार रघुवंश मणि, हरहु विषम भवपीर ॥ १
बार बार वर मांगहुँ, हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सत्संग ॥ २
अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान।
जन्म-जन्म रति रामपद, यह वरदान न आन ॥ ३
स्वामी मोहि न विसारियो, लाख लोग मिलि जाहिं।
हमसे तुमको बहुत हैं, तुमसे हमको नाहिं ॥ ४
नहिं विद्या नहिं बाहुबल, नहिं खर्चन को दाम।
मोसे पतित अपंग की, तुम पति राखहु राम ॥ ५
श्रवन सुयश सुनि आयहुँ, प्रभु भंजन भवपीर।
त्राहि-त्राहि आरति हरण, शरण सुखद रघुबीर ॥ ६
कामिनि नारि पियारि जिमि लोभहिं प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोंहि राम ॥ ७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आरती श्री बजरंगबली की

आरति कीजै हनुमान लला की ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥
जाके बल से गिरवर कांपे ।
रोग-दोष जाके निकट न झांके ॥
अंजनि पुत्र महा बलदाई ।
संतन के प्रभु सदा सहाई ॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये ।
लंका जारि सिया सुधि लाये ॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई ।
जात पवनसुत बार न लाई ॥
लंका जारि असुर सब मारे ।
सीता राम जी के काज संवारे ॥
लक्ष्मण मुरछि परे धरणी में ।
आन सजीवन प्राण उबारे ॥
पैठि पताल तोति यमकातर ।
अहिरावण के भुजा उखारे ॥
बाएँ भुजा असुर संहारे ।
दहिने भुजा सब सन्त उबारे ॥
सुर नर मुनि जन आरति उतारें ।
जै जै जै हनुमान जी उचारें ॥
कंचन थार कपूर की बाती ।
आरति करत अंजनी माई ॥
जो हनुमान जी की आरति गावे ।
बसि बैकुंठ अमर पद पावे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आरती श्री शंकर जी की

जय शिव ओंकारा प्रभु जय शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा, विष्णु, सदा शिव अर्द्धांगी धारा ॥
ॐ हर हर महादेव

एकानन चतुरानन पंचानन राजे ।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥ ॐ हर हर····

दो भुज चारु चतुर्भुज दसभुज ते सोहें ।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहें ॥ ॐ हर हर····

अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी ।
चन्दन मृग मद सोहे भाले शुभकारी ॥ ॐ हर हर····

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे ।
ब्रह्मादिक सनकादिक प्रेतादिक संगे ॥ ॐ हर हर····

कर के मध्य कमण्डलु और त्रिशूल धारी ।
सुखकारी दुखहारी जग पालन कारी ॥ ॐ हर हर····

ब्रह्मा, विष्णु, सदा शिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ॥ ॐ हर हर····

त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे ॥ ॐ हर हर···

बोलो भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश की जय !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आरती माता अम्बे की !

ओ अम्बे, तुम हो जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैंया हम सब उतारें तेरी आरती।
तेरे जगत के भक्त जनों पर भीड़ पड़ी है भारी,
दानव दल पर टूट पड़ी मां करके सिंह सवारी,
सौ, सौ, सिंहों सी तू बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तू ही ललकारती, ओ मैंया - - ।
माँ-बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता,
पूत-कपूत सुने हैं पर न माता सुनी कुमाता,
सब पर करुणा दर्शाने वाली, सबको हरसाने वाली,
नैया भंवर से उबारती, ओ मैंया - - ।
नहीं मांगते धन और दौलत, न चाँदी न सोना,
हम तो मांगे मां तेरे चरणों में छोटा सा कोना,
सब पर अमृत बरसाने वाली, विपदा मिटाने वाली,
सतियों के सत को संभारती, ओ मैंया - - ।
आदि शक्ति भगवती भवानी, हो जग की हितकारी,
जिसने याद किया आई मां, करके सिंह सवारी,
मैंया करती किरपा, किरपाली रखती जन की रखवाली,
दुष्टों को पल में माता मारती, ओ मैंया - - ।
भक्त तुम्हारे निशदिन मैंया, तेरे ही गुण गावें,
मनवांछित वर दे दे इनको, तुझसे ही ध्यान लगावें,
मैंया तू ही वर देने वाली, जाये न कोई खाली,
दर पै तुम्हारे माता मांगते, ओ मैंया - - ।
चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली,
वरद हस्त सर पर रख दो, मां संकट हरने वाली,
मैंया भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,
काशी के कारज तू ही सवारती, ओ मैंया - - ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आरती ओऽम् जय जगदीश हरे

ओऽम् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे। ओऽम्...
जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का, स्वामी दुख...।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का। ओऽम्...
मात-पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी, स्वामी शरण...।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी। ओऽम्...
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम...।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी। ओऽम्...
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता, स्वामी तुम...।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता। ओऽम्...
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती, स्वामी सब...।
किस विधि मिलूँ दयामय! तुमको मैं कुमती। ओऽम्...
दीनबन्धु दुख हर्ता, तुम रक्षक मेरे, स्वामी तुम...।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे। ओऽम्...
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वामी पाप...।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा। ओऽम्...
तन, मन, धन जो कुछ है, सबही है तेरा, स्वामी सब...।
तेरा तुझको अर्पित, क्या लागे मेरा। ओऽम्...
जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे। ओऽम्...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वन्दना

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिन्धु करुणा कीजिये ।
हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये ॥ हे०
खा रहा गोते हूँ मैं भवसिन्धु के मँझधार में ।
आसरा है दूसरा कोई न अब संसार में ॥ हे०
मुझमें है जपतप न साधन और नाही कुछ ज्ञान है ।
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है ॥ हे०
पाप बोझ से लदी नैया भंवर में आ रही ।
नाथ दौड़ो, अब बचाओ जल्द डूबी जा रही ॥ हे०
आप भी यदि छोड़ देंगे, फिर कहाँ जाऊँगा मैं ।
जन्म दुःख से नाव कैसे पार कर पाऊँगा मैं ॥ हे०
सब जगह 'मंजुल' भटक कर ली शरण अब आपकी ।
पार करना या न करना दोनों मर्जी आपकी ॥ हे०

त्वमेव माता च पिता त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं ममदेव देव ॥

तू दयालु दीन हौं, तू दानी हौं भिखारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुञ्ज हारी ॥ तू०
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसो ।
मो समान आरत नहिं, आरति हरि तोसों ॥ तू०
ब्रह्म तू, हौं जीव, तू ठाकुर हौं चेरो ।
तात मात गुरू सखा, तू सब विधि हितु मेरो ॥ तू०
तोहि मोहि नाते अनेक, मानिये जो भावै ।
ज्यों त्यों 'तुलसी' कृपालु, चरण सरण पावै ॥ तू०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उद्बोधन

सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये ।
जाही विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये ॥
मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में ।
तू अकेला नहीं प्यारे, राम तेरे साथ में ॥
विधि का विधान जान, हानि लाभ सहिये ।
जाही विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये ॥
किया अभिमान तो फिरे मान नहिं पायेगा ।
होगा प्यारे वही जो, श्रीराम जी को भायेगा ॥
फल आशा त्याग, शुभ काम करते रहिये ।
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये ॥
जिन्दगी की डोर सौंप, हाथ दीना नाथ के ।
महलों में राखे चाहे झोपड़ी में बास दे ॥
धन्यवाद निर्विवाद, राम राम कहिये ।
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये ॥
आशा एक राम जी से, दूजी आशा छोड़ दे ।
नाता एक राम जी से, दूजा नाता तोड़ दे ॥
साधु-संग, राम-संग, अंग-अंग रंगिये ।
काम-रस त्याग प्यारे, राम-रस पगिये ॥
सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये ।
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीतासार

आप चिन्ता करते हो तो व्यर्थ है ।
मौत से जो डरते हो तो व्यर्थ है ॥
आत्मा तो चिर-अमर है जान लो ।
भूतकाल जो गया सच्चा अर्थ है ॥
वर्तमान देख लो चलता भगा ।
भविष्य की चिन्ता सताती है तुम्हें ।
है विधाता सारी रचना रच गया ।
नयन गीले हैं तुम्हारा क्या गया ?
साथ क्या लाये जो तुमने खो दिया ?
किस लिये पछता रहे हो तुम कहो ?
जो लिया तुमने यहीं से है लिया ॥
नंगे तन पैदा हुए थे खाली हाथ ।
कर्म रहता है सदा मानव के साथ ॥
सम्पन्नता पर मग्न तुम होते रहो ।
एक दिन तुम ही चलोगे खाली हाथ ॥
धारणा मन में बसा लो बस यही ।
छोटा-बड़ा, अपना-पराया है नहीं ॥
देख लेना मन की आँखों से जरा ।
भूमि-धन-परिवार, संग जाता नहीं ॥
तन का क्या अभिमान करना बावरे ।
कब निकल जाये यह तेरा प्राण रे ॥
पाँच तत्वों से बना यह तन तेरा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होगा निश्चय यह यहाँ निष्प्राण रे ॥
स्वयं को भगवान के अर्पण करो ।
निज को अच्छे कर्मों से तर्पण करो ॥
शोक से, भय से रहोगे मुक्त तुम ।
सर्वस्व 'रत्नम्' ईश को समर्पण करो ॥

राम का नाम लेकर जो मर जायेंगे ।
वह अमर नाम दुनिया में कर जायेंगे ॥
यह न पूछो कि मर कर किधर जायेंगे ।
वह जिधर भेज देंगे उधर जायेंगे ॥ राम०
टूट जाये न माला कहीं प्रेम की ।
कीमती ये रतन सब बिखर जायेंगे ॥ राम०
यह मानो न मानो खुशी आपकी ।
हम मुसाफिर हैं कल अपने घर जायेंगे ॥ राम०

स्तुति

हे दीनबन्धु दयालु शंकर जानि अपनाइये,
भवसिन्धु पार उतार मोको निज समीप बुलाइये।
जाने न जाने पाप मेरे तिनहि आप नसाइये।
कर जोरि-जोरि निहोर माँगहुं बेगि दरस दिखाइये।
देवी सहाय सुनाय शिवजी को प्रेम सहित जो गावही,
जगयोनि ते छूटि जाहि ते नर सर्वदा सुख पावही।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथ श्रीगणेश चालीसा

दोहा

जय गणपति सदगुण सदन, करिवर बदन कृपाल।
विघ्न हरण मङ्गल करण, जय जय गिरिजा लाल॥

चौपाई

जय जय जय गणपति गणराजू। मङ्गल भरण करण शुभ काजू॥
जय गजबदन सदन सुख दाता। विश्व बिनायक बुद्धि विधाता॥
वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन। तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन॥
राजित मणि मुक्तन उर माला। स्वर्ण मुकुट सिर नयन विशाला॥
पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं। मोदक भोग सुगन्धित फूलं॥
सुन्दर पीताम्बर तन साजित। चरण पादुका मुनि मन राजित॥
धनि शिव सुवन षडानन भ्राता। गौरी ललन विश्व-विख्याता॥
ऋद्धि सिद्ध तव चँवर सुधारे। मूषक वाहन सोहत द्वारे॥
कहौं जन्म शुभ कथा तुम्हारी। अति शुचि पावन मङ्गलकारी॥
एक समय गिरि राज कुमारी। पुत्र हेतु तप कीन्हा भारी॥
भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा। तब पहुँच्यो तुम धरि द्विज रूपा॥
अतिथि जानि कै गौरि सुखारि। बहु विधि सेवा करी तुम्हारी॥
अति प्रसन्न है तुम वर दीन्हा। मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा॥
मिलहि पुत्र तुहि, बुद्धि विशाला। बिना गर्भ धारण, यहि काला॥
गणनायक, गुण, ज्ञान निधाना। पूजित प्रथम, रूप भगवाना॥
अस कहि अन्तर्ध्यान रूप है। पलना पर बालक स्वरूप है॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनि शिशु, रुदन जबहि तुम ठानी। लखि मुख सुख नहिं गौरि समानी॥
सकल मगन, सुख मंगल गावहिं। नभ ते सुरन, सुमन वर्षावहिं॥
शम्भु, उमा बहु दान लुटावहिं। सुर मुनि जन सुत देखन आवहिं॥
लखि अति आनन्द मंगल साजा। देखन भी आये शनि राजा॥
निज अवगुण गुनि शनि मन माहीं। बालक देखन चाहत नाहीं॥
गिरिजा कछु मन भेद बढ़ायो। उत्सव मोर न शनि तुहि भायो॥
कहन लगे शनि, मन सकुचाई। का करिहो शिशु मोहि दिखाई॥
नहिं परितोष उमा उर भयऊ। शनि सों बालक देखन कह्यऊ॥
पड़तहि शनि दृग कोण-प्रकाशा। बालक शिर उड़ि भयो अकाशा॥
गिरजा गिरीं बिकल ह्वै धरणी। सो दुख दशा जाय नहिं वरणी॥
हाहाकार मच्यो कैलाशा। शनि कीन्ह्यो लखि सुत को नाशा॥
तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधाये। काटि चक्र सों गज शिर लाये॥
बालक के धड़ ऊपर धारयो। प्राण-मन्त्र पढ शङ्कर डारयो॥
नाम 'गणेश' शम्भु तब कीन्हे। प्रथम पूज्य बुधि निधि वर दीन्हे॥
बुद्धि परीक्षा जब शिव लीन्हा। पृथ्वी कर प्रदक्षिणा कीन्हा॥
चले षडानन भरमि भुलाई। रचे बैठ तुम बुद्धि उपाई॥
चरण मातु-पितु के धर लीन्हें। तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें॥
धनि गणेश कहि शिव हिय हरष्यो। नभ तें सुरन सुमन बहु बरष्यो॥
तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई। शेष सहस मुख सकें न गाई॥
मैं मति हीन मलीन दुखारी। करहुँ कौन विधि विनय तुम्हारी॥
भनत 'रामसुन्दर' प्रभु दासा। लग प्रयाग ककरा दुर्वासा॥
अब प्रभु दया दीन पर कीजै। अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजै॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोहा

श्री गणेश यह चालीसा, पाठ करैं धरि ध्यान।
नित नव मंगल गृह बसैं, लहे जगत सन्मान॥
सम्बत् अयन सहस्र दश, ऋषि पञ्चमी दिनेश।
पूरण चालीसा भयो, मङ्गल मूर्ति गणेश॥

इति श्री गणेश चालीसा सम्पूर्ण

अथ श्री गंगा चालीसा प्रारम्भ

दोहा

जय जय जय जग पावनी, जयति देवसरिगंग॥
जय शिव जटा निवासिनी, अनुपम तुंगतरंग॥

चौपाई

जय जग जननि हरनि अघ खानी। आनन्द करनि गंग महरानी॥
जय भागीरथि सुरसरि माता। कलिमल मूल दलनि विख्याता॥
जय जय जह्नु सुता अघ हननी। भीषम की माता जग जननी॥
धवल कमल दल सम तनु साजै। लखि शत शरद चन्द्र छवि लाजै॥
वाहन मकर विमल सुचि सोहै। अमिय कलश कर लखि मन मोहै॥
जड़ित रत्न कंचन आभूषण। हिय मणि हार हरणि तम दूषण॥
जग पावनि त्रय ताप नसावनि। तरल तरंग तुङ्ग मन भावनि॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो गणपति अति पूज्य प्रधांना। तिहुँ ते प्रथम गंग स्नाना॥
ब्रह्म कमण्डल वासिनि देवी। श्री प्रभु पद पंकज सुख सेवी॥
साठ सहस्र सगर सुत तारयो। गंगा सागर तीरथ धारयो॥
अगम तरङ्ग उठ्यो मन भावन। गहि तीरथ हरिद्वार सुहावन॥
तीरथ राज प्रयाग अक्षैवट। धर्म्यो मातु पुनि काशी करवट॥
धनि धनि सुरसरि स्वर्ग सुसीढ़ी। तारणि अमित पितृ पद पीढ़ी॥
भागीरथ तप कियो अपारा। दियो ब्रह्म तब सुरसरि धारा॥
जब जग जननि चलेउ हहराई। शम्भु जटा महँ रह्यो समांई॥
वर्ष पर्यन्त गंग महरानी। रहीं शम्भु के जटा भुलानी॥
पुनि भागीरथि शम्भुहिं ध्यायो। तब इक बुन्द जटा से पायो॥
ताते मातु भई त्रय धारा। मृत्यु लोक, नभ, अरु पातारा॥
गई पताल प्रभावति नामा। मन्दाकिनि गई गगन ललामा॥
मृत्यु लोक जाह्नवी सुहावनि। कलिमल हरणि अगम जग पावनि॥
धनि मइया तव महिमा भारी। धर्म धुरी कलि कलुष कुठारी॥
मातु प्रभावति धनि मंदाकिनि। धनि धनि देव सरित भय नासिनि॥
पानं करत निर्मल गंगा जल। पावत मन इच्छित अनन्त फल॥
पूरब जन्म पुन्य जब जागत। तबहिं ध्यान गंगा महँ लागत॥
जइ पगु सुर सरि हेतु उठावहि। तइ जगि अश्वमेध फल पावहि॥
महा पतित जिन काहु न तारे। तिन तारे इक नाम तिहारे॥
शत योजनहू से जो ध्यावहि। निश्चय विष्णुलोक पद पावहि॥
नाम भजत अगणित अघ नाशै। विमल ज्ञान बल बुद्धि प्रकाशै॥
जिमि धन मूल धर्म अरु दाना। धर्म मूल गंगा जल पाना॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तव गुण गणन करत दुख भाजत। गृह गृह सम्पति सुमति विराजत॥
गंगहि नेम सहित नित ध्यावत। दुर्जनहूँ सज्जन पद पावत॥
बुद्धि हीन विद्या बल पावै। रोगी रोग मुक्त ह्वै जावै॥
गङ्गा गङ्गा जो नर कहहीं। भूखा नङ्गा कबहुं न रहहीं॥
निकसतही मुख गङ्गा माई। श्रवण दाबि यम चलहि पराई॥
महा अघिन अधमन कहँ तारें। भये नर्क के बन्द किवारें॥
जो नर जपै गङ्ग शतनामा। सकल सिद्ध पूरण ह्वै कामा॥
सब सुख भोग परम पद पावहिं। आवागमन रहित ह्वै जावहिं॥
धनि मइया सुरसरि सुखदेनी। धनि धनि तीरथ राज त्रिवेणी॥
ककरा ग्रांम ऋषी दुर्वासा। सुन्दर दास गङ्ग कर दासा॥
जो यह पढ़े गङ्ग चालीसा। मिले भक्ति अविरल वागीसा॥

दोहा

नित नवसुख लहे, धरे गङ्ग का ध्यान।
अंत समय सुरपुर बसें, सादर बैठि विमान॥
सम्वत् भुज नभ गगनदिश, रामजन्मदिन चैत्र।
पूरण चालीसा कियो, हरि भक्तन हित नैत्र॥

इति श्री गंगा चालीसा सम्पूर्णम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी। नमो नमो अम्बे दुख हरनी ॥
निरङ्कार है ज्योति तुम्हारी। तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥
शशि लिलार मुख महा विशाला। नेत्र लाल भृकुटी विकराला ॥
रूप मातु को अधिक सुहावै। दरश करत जन अति सुख पावै ॥
तुम संसार शक्ति लै कीना। पालन हेतु अन्न धन दीना ॥
अन्नपूरना हुइ जग पालां। तुमहीं आदि सुन्दरी बाला ॥
प्रलय काल सब नाशन हारी। तुम गौरी शिव शङ्कर प्यारी ॥
शिव योगी तुम्हरे यश गावैं। ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावैं ॥
रूप सरस्वति की तुम धारा। दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥
धरा रूप नरसिंह को अम्बा। परगट भई फाड़ कर खम्बा ॥
रक्षा करि प्रहलाद बचायो। हिरणकुश को स्वर्ग पठायो ॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं। श्री नारायण अंग समाहीं ॥
क्षीरसिन्धु में. करत विलासा। दयासिन्धु दीजै मन आसा ॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी। महिमा अमित न जात बखानी ॥
मातंगी धूमावति माता। भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ॥
श्री भैरव तारा जग तारिणि। छिन्नभाल भव दुःख निवारिणि ॥
केहरिवाहन सोह भवानी। लंगर वीर चलत अगवानी ॥
कर में खप्पर खड्ग विराजै। जाको देख काल डर भाजै ॥
सोहै अस्त्र और तिरशूला। जाते उठत शत्रु हिय शूला ॥
नागकोटि में तुहीं विराजत। तिहूँ लोक में डंका बाजत ॥
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे। रक्तबीज शङ्खन संहारे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महिषासुर नृप अति अभिमानी। जेहि अघ भार मही अकुलानी॥
रूप कराल काली को धारा। सेन सहित तुम तिहि संहारा॥
परी गाढ संतन पर जब जब। भई सहाय मातु तुम तब तब॥
अमर पुरी औरो सब लोका। तव महिमा सब रहे अशोका॥
बाला में है ज्योति तुम्हारी। तुम्हें सदा पूजै नर नारी॥
प्रेम भक्ति से जो जस गावै। दुख दारिद्र निकट नहि आवै॥
ध्यावै तुम्हें जो नर मन लाई। जन्म मरण ताको छुट जाई॥
योगी सुर मुनि कहत पुकारी। योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी॥
शङ्कर आचारज तप कीनो। कामरुक्रोध जीति सब लीनो॥
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को। काहु काल नहिं सुमिरो तुमको॥
शक्ति रूप को मरम न पायो। शक्ति गई तव मन पछितायो॥
शरणागति हुइ कीर्ति बखानी। जै जै जै जगदम्ब भवानी॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा। दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो। तुम बिन कौन हरे दुख मेरो॥
आशा तृष्णा निपट सतावै। रिपु मूरख मोहि अति डरपावै॥
शत्रु नाश कीजे महरानी। सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी॥
करो कृपा हे मातु दयाला। ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला॥
जब लगि जियौं दया फल पाऊँ। तुम्हरे जस मैं सदा सुनाऊँ॥
दुर्गा चालीसा जो गावै। सब सुख भोग परम पद पावै॥
देवीदास शरण निज जानी। करहु कृपा जगदम्ब भवानी॥

इति श्री दुर्गा चालीसा समाप्तम्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हितोपदेश

स्मर कृष्णं भज हरिं नम विष्णुं श्रयाऽच्युतम्।
त्यज कामं जहि क्रोधं जहि मोहं भवालयम्॥

श्री कृष्ण का स्मरण, हरि का भजन, विष्णु को नमन एवं भगवान का आश्रय करो। काम को त्यागो, क्रोध को नष्ट करो और संसार के मोह का त्याग करो।

शृणु शौरिकथाः पुण्याः पश्य श्रीपतिविग्रहम्।
जिघ्र श्रीपादतुलसीः स्पृश वैकुण्ठवल्लभम्॥

भगवान की पुण्य कथा का श्रवण करो। लक्ष्मीपति का दर्शन करो। भगवान के चरणों पर अर्पित तुलसी को सूंघो और वैकुण्ठ नाथ का स्पर्श करो।

भुंक्ष्व केशवनैवेद्यं तिष्ठ माधवमन्दिरे।
जप नारायणमन्त्रं पठ तन्नाम मंगलम्॥

भगवान के भोग से प्रसाद पाओ। भगवान के मन्दिर में बैठो, नारायण का जप करो और उनके मंगलमय नाम का पाठ करो।

पाहि प्रपन्न जनतां ब्रूहि तथ्यं हितं नृणाम्।
देहि कांक्षितमर्थिभ्यः याहि सज्जनसंगतिम्॥

शरणागतों की रक्षा करो, सज्जनों के लिये हितकर वाणी बोलो, याचकों की इच्छायें पूरी करो और सज्जनों की संगति में रहो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुरु भूतदयां नित्यं चर धर्ममहर्निशम्।
जानीहि नित्यमात्मानं अवेह्यन्यद्धि नश्वरम्॥

नित्य प्राणियों पर दया करो, निरन्तर धर्माचरण करो, 'भगवान नित्य है, अन्य वस्तुयें अनित्य हैं' ऐसा जानो।

पञ्चश्लोकीमिमां शश्वत् पठ धारय चिंतय।
एतावान् सर्ववेदार्थः समासेन निरूपितः॥

इन पाँच श्लोकों का पाठ, धारण एवं मनन करो जिसमें समस्त वेदों के सार को संक्षेप में निरूपित किया गया है।

नास्ति नारायण समं न भूतं न भविष्यति।
एतेन सत्यवाक्येन सर्वार्थान् साधयाम्यहम्।

नारायण के समान न कोई है, न था और न कोई होगा।

अमृत रस

श्रवण-भक्ति

कथा में श्रवण किए हुए को आचरण में उतारें तो ही उसकी सार्थकता है। श्रवण भक्ति से पाप जलते हैं, मन का मैल धुलता है और प्रभु का प्रेम जाग्रत होता है।

कथा सुनने के बाद जीवन में बदलाहट आनी चाहिए।

कथा का श्रवण पुण्य प्राप्त करने के लिए नहीं, दुर्वृत्ति की समाप्ति के लिए करो। जीवन में क्रांति लाने के लिए ही कथा सुनो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि कथा सुनने के बाद जीवन में नई चेतना न आये और नये जीवन की शुरुआत न हो तो कथा सुनना व्यर्थ है।
कथा में सुने हुए को क्रिया में उतारें तो ही वह काम का है। •

वासना राक्षसी

भोगों से कभी तृप्ति नहीं होती। उनसे तो वासनाएँ बढ़ती ही जाती हैं और भोगने वाले का ही भक्षण कर जाती हैं।

वासना ऐसी भिखारिन है जो खिलाने वाले को ही खा जाती है।

सुख भोगने की वासना ही बहुत दुःख देती है। वासना ही पुनर्जन्म का कारण है। विवेक और संयम से ही वासना शान्त होती है। •

गृहस्थ–जीवन

जिसका जीवन दिव्य होता है, वही मरने के बाद देवता बनता है।

मैं तुच्छ नहीं, मैं तो शुद्ध चैतन्यमय परमात्मा का अंश हूँ—यह हमेशा याद रखो।

प्रभु को हमेशा साथ रखोगे, तभी जीवन सफल होगा।

जिसका अधिकार सिद्ध होता है, उसे ईश्वर अपने आप बुलाते हैं।

पूरा परिवार एक साथ बैठकर प्रार्थना करे, यही गृहस्थाश्रम का आनन्द है। सत्कर्म की प्रेरणा देने के लिए ही बालक के हाथों से सत्कर्म कराओ। यौवन में धीरे-धीरे संयम बढ़ाते हुए भक्ति करोगे तो प्रभु अवश्य मिलेंगे।

परोपकार करते समय अभिमान न आ जाए—इसका ध्यान रखो। •

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाप

जीभ से अधिक पाप करने वाला व्यक्ति अगले जन्म में गूंगा होता है। जो हिसाब में घोटाला करता है, वही घबराता है।

ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसके हाथों पाप नहीं हुए हों, लेकिन पाप करने के बाद जो पछतावा नहीं करता, वह मनुष्य नहीं।

पाप करना बड़ा गुनाह नहीं, किन्तु पाप कबूल न करना, किये गये पाप के लिए पश्चाताप न करना सबसे बड़ा गुनाह है।

पुण्य गुप्त रखो, पाप जाहिर करो।

जो पाप जाहिर हैं, वही निष्पाप होते हैं।

जो पाप जाहिर नहीं होते, वही चाहे जेल न जाये, पर परिणाम दुखःदायी होता है। जो पाप को छिपाता है, उसे पाप छोड़ता नहीं, वरन् उसके मन में घर किये रहता है। ●

शान्ति

शान्ति ज्ञानी या विद्वान् बनने से नहीं, भक्ति से सराबोर होने से मिलती है।

सत्य की हत्या करने वालों को शान्ति कहाँ से मिलेगी ?

भावों से भरा हुआ हृदय ही परमात्मा के निकट द्रवित होता है और उसी को जीवन में शान्ति मिलती है।

आज का मनुष्य न घर छोड़ सकता है, न घर में शान्ति से रह सकता है।

संयम एवं सादगी से ही जीवन में शान्ति और सन्तोष मिलता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मान और प्रेम दूसरों को देते रहो। इससे मन शान्त रहेगा।
सुख बाहरी सुविधाओं में नहीं, आन्तरिक तृप्ति में रहता है।
दूसरे को सुखी करके आनन्द का अनुभव करने वाला महा सुखी है।

लक्ष्मी गौण, लक्ष्मी नारायण मुख्य

स्वयं के हाथों सत्कर्म में प्रयुक्त होने वाला धन ही अपना है।
पैसे के लिए प्रयत्न करो, पाप नहीं।
जीवन में पैसा गौण है, परमात्मा मुख्य है।
तुम अधिक पाप करोगे तो भी अधिक पैसा मिलने वाला नहीं है।
पाप का पैसा कभी भी शांति नहीं देता।
बहुत से लोग खूब पैसा कमाते हैं और भौतिक सुख भोगते हैं, किन्तु उनमें आन्तरिक शान्ति नहीं होती।
पैसा कमाना सरल है, उसका सदुपयोग करना कठिन है।
थोड़ा धन भोग विलास में खर्च हो बाकी का प्रभु-सेवा में काम आए तो लक्ष्मी प्रसन्न हो जाए।
लक्ष्मी जीवभोग्य नहीं, ईशभोग्य है।

धन और धर्म

पसीने से भीगा हुआ पैसा ही परमात्मा को प्यारा होता है।
पसीना बहाकर कमाया हुआ धन ही सुद्बुद्धि प्रदान करता है।
लक्ष्मी को माँ मानकर सत्कर्म में लगायेंगे तो वह प्रसन्न होगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि उपभोग की इच्छा से उनका दुरुपयोग करेंगे तो लात मारेगी।

धन के बजाय धर्म श्रेष्ठ है। धंधा करते समय हम भगवान को न भूलें।

यह शरीर ही मेरा नहीं, तो यह धन मेरा कैसे हो सकता है? यह भूलना नहीं। धन का दुरुपयोग लक्ष्मी का अपमान है।

विषयानन्द और भजनानन्द

विषयानन्द छोड़ोगे तभी भजनानन्द प्राप्त करोगे।

प्रवृत्ति का विषयानंद छोड़ेंगे, तभी निवृत्ति का नित्यानन्द प्राप्त कर सकेंगे। चाय न मिलने पर जिसका सिर दुःख ने लगता है, वह वेदांत को क्या समझेगा।

जिसका चित्त संसार के दुखों में रचा-पचा है, वह ब्रह्मचिन्तन में कहाँ से लगेगा। जिसको पान-सुपारी में ही रस आ रहा है, उसे हरि-भक्ति में कहां से रस आएगा?

जिसके जीवन में भोग की प्रधानता है, वह भगवान को तुच्छ समझ कर क्षुद्र जीवन जीता है।

हम व्यसन के गुलाम बनने के लिए नहीं, परमात्मा के प्यारे होने के लिए पैदा हुए हैं।

लड़के की शादी हो और बहू घर में आए तो वानप्रस्थी बनो। •

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुक्ति

मुक्ति शरीर के मरने पर नहीं, मन के मरने पर प्राप्त होती है।

सत्संग, सत्कर्म, संकीर्तन से प्रभु मिलते हैं।

ज्ञानमार्ग त्याग की सूचना देता है, भक्ति मार्ग समर्पण चाहता है।

आत्मा-परमात्मा का दिव्य रमण ही रासलीला है।

स्त्री-पुरुष का भेद भूलने पर ही गोपी भाव जाग्रत होता है।

निष्काम भाव का सेवन करके ही मुक्त हुआ जा सकता है।

मन

मन को मजबूत बनाने वाला एकमात्र औषध मन्त्र जप है।

मन पर झूठा विश्वास करने वाला ही फंस जाता है।

मन जब अति शुद्ध होता है, तभी प्रभु मिलन की तीव्र इच्छा पैदा होती है।

मन बड़ा होगा तो ही परिवार एवं जीवन में शान्ति रह सकेगी।

मन को जीतने वाला ही जगत विजेता बन सकता है।

मन को सख्ती से नहीं प्रेम से समझा कर वश में रखो।

मन को वासना रहित बनाने पर ही शांति मिल सकती है।

चंचल मन को संकीर्तन द्वारा स्थिर बनाओ।

पश्चाताप के आंसू से मन का मैल धुलता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाप से डर

जिसे पाप का डर नहीं, उसे मन की शान्ति नहीं मिलती।

अति पापी और प्रेत दोनों एक जैसे हैं।

भोजन करते समय जूठा छोड़ना सबसे बड़ा पाप है। अन्न ब्रह्मरूप है। उसको नहीं बिगाड़ना चाहिए।

संग्रह और परिग्रह में लगे हुए का नाम ही जरासंध है।

रजोगुण ही काम और क्रोध का पिता है।

प्रत्येक इन्द्रिय से भक्ति करो, पाप से बचे रहोगे।

निश्चय करो—आज से मुझे नया पाप नहीं करना है।

हम थोड़े से सुख के लिए पाप की कितनी बड़ी गठरी उठाते हैं?

आचरण

जहाँ आचार-विचार की शुद्धि है, वही भक्ति परिपुष्ट होती है। सदाचार नींव है, सद्‌विचार भवन है। नींवें मजबूत होंगी, तो भवन टिक सकेगा। गर्भवती स्त्री के आचार-विचार का गर्भस्थ शिशु पर बहुत गहरा असर होता है।

स्नान से शरीर की शुद्धि, ध्यान से मन की शुद्धि और दान से धन की शुद्धि होती है। ध्यान का सच्चा आनन्द तो प्रातःकाल में ही प्राप्त किया जा सकता है।

सत्य को जानने के बाद यदि आचरण में ढाले, तभी वह काम का है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्राद्ध

लड़के-लड़कियों पर मोह नहीं रखना चाहिये, विवेक रूपी लड़का ही सद्गति दिलाता है। हमें अपना उद्धार आप करना है।

सद्गति पुत्र से नहीं, सत्कर्म से प्राप्त होती है।

शरीर के परोपकार एवं परमात्मा के काम में हवन कर देना सच्चा पिंडदान है। तुम अपना श्राद्ध खुद ही करो। श्रद्धापूर्वक किया गया सत्कर्म ही श्राद्ध है। ●

जीवन का लक्ष्य

ईश्वर की उपासना रिद्धि-सिद्धि के लिए नहीं हृदय की शुद्धि के लिए करो।

प्रभु को खुश रखने का लक्ष्य रखकर ही प्रत्येक काम करो।

हृदय यदि हमेशा भगवद्भाव में ही द्रवित रहता है तो पाप के विकार नष्ट होते हैं।

प्रभु को राजी रखने के लिए की गई प्रत्येक व्यावहारिक प्रवृत्ति भी प्रभु की भक्ति है।

जिस तरह पैसा कमाने के लिए पसीना बहाते हो, उसी तरह परमात्मा को प्राप्त करने के लिए भी पसीना बहाओ। ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सद्गुरु

जो प्रभु के पास ले जाता है, वह प्रभु से भी श्रेष्ठ है।

सद्गुरु की कृपा से ही बुद्धि में स्थिरता आती है।

सद्गुरु की शरण प्रभु के चरणों में पहुँचाती है।

जो स्वयं मोह में फंसा हो वह दूसरे को मोह से कैसे छुड़ा सकता है।

जो वाणी के बजाय व्यवहार से समझाए, वही सद्गुरु है।

सन्त ही सर्वेश्वर के स्वरूप की पहचान करते हैं।

मृत्यु को सुधारो

मृत्यु का दिन ईश्वर को अपना हिसाब देने का दिन है।

भक्ति से ही मृत्यु सुधरती है।

समय का नाश सर्वनाश है।

जीवन की समाप्ति पर ही सत्कर्म की समाप्ति होती है।

मृत्यु निश्चित् है। हमेशा मृत्यु की थोड़ी-थोड़ी तैयारी करते रहो।

प्रभु के साथ प्रीति बाँधो, मृत्यु का डर नष्ट हो जायेगा।

प्रभु का नाम स्मरण मरण को सुधारता है। मृत्यु के बाद तो केवल जीवन में किया गया प्रभुस्मरण व सत्कर्म ही साथ जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रारब्ध

सम्पत्ति सन्तति और सांसारिक सुख तो पूर्वसंचित प्रारब्ध के अनुसार ही मिलते हैं।

तुम्हारे जीवन की फिल्म तो जन्म के पहले ही निश्चित हो गई है। उसे साक्षीभाव से देखोगे तो सुखी रहोगे। कर्त्ताभाव रखोगे तो दुःख उठाओगे।

तुम्हें कितने पैसे मिलने वाले हैं—यह प्रभु ने पहले ही नक्की कर दिया है। तुम्हारे भाग्य का पैसा कोई दूसरा नहीं ले जा सकता और दूसरे के भाग्य का पैसा तुम्हें मिलने वाला नहीं है।

तुम्हारी चिन्ता प्रभु को ज्यादा है, इसलिए जन्म के पहले ही तुम्हारी सब व्यवस्था तैयार करके रखते हैं। ●

पुण्य

तीर्थ भूमि में किया हुआ सत्कर्म अधिक श्रेयस्कर होता है।

जो पुण्य के काम में सहयोग देता है, वह भी पुण्य का भागी बनता है।

मान-अपमान में मन को शान्त रखना महान पुण्य का कार्य है।

तीर्थ में मौज-शौक के लिए नहीं, तप करके पवित्र होने के लिए जाना चाहिये। पाप न करना ही महान पुण्य है। ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन चीजें हमेशा याद रखनी चाहिए

तीन चीजें जिन्दगी में एक बार मिलती हैं—

माता-पिता, जवानी और मानव जन्म।

तीन चीजें किसी का इन्तजार नहीं करती हैं—

वक्त, मौत और ग्राहक।

तीन चीजें निकली हुई वापस नहीं आती हैं—

तीर कमान से, बात जबान से और प्राण शरीर से।

तीन चीजें परदे में होनी चाहिए—

धन, स्त्री और भोजन।

तीन चीजों से बचना चाहिए—

बुरी संगत, स्वार्थ और निन्दा।

तीन चीजों में मन लगाने से फायदा होता है—

ईश्वर, मेहनत और विद्या।

तीन बातें नहीं भूलना चाहिए—

कर्ज, मर्ज और फर्ज।

तीन चीजों का आदर करना चाहिए—

माता-पिता, मेहनत और गुरु।

तीन बातें हमेशा अपने बस में रखनी चाहिए—

मन, काम और लोभ।

तीनों चीजों पर दया करनी चाहिए—

बालक, भूखा और पागल।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"बाबा की बड़ी दया है"

'ग्राहक'

ग्राहक हमारे यहाँ का महत्वपूर्ण व्यक्ति है। वह हम पर निर्भर नहीं हैं, हम उस पर निर्भर हैं। वह हमारे काम में अवरोधक नहीं है, परन्तु हमारे काम का हेतु है। वह कोई बाहरी व्यक्ति नहीं है, परन्तु हमारे व्यापार का एक अंग है। हम उसकी सेवा करके उस पर कोई उपकार नहीं करते, किन्तु वह सेवा का अवसर प्रदान कर हमें अनुग्रहीत करता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौजन्य से—

राकेश वस्त्रालय

२६३ दारागंज, इलाहाबाद

आकर्षक एवं नवीनतम डिजाइनों के कपड़े, साड़ियाँ,
शाल, कम्बल तथा रेडीमेड कपड़े
व होजरी के प्रमुख विक्रेता

प्रो० प्रेमचन्द्र वैश्य

मुद्रण सहयोग : एकेडमी प्रेस दारागंज, इलाहाबाद

☎ 650970

कम्प्यूटर टाइप सैटर्स : सरस्वती टाइप फाउन्ड्री, इलाहाबाद

☎ 651363

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri